हे युवाओं–माया के Royal रूप से सावधान

1. कलिकाल के अन्त में आत्मा की शक्ति क्षीण होते–2 जब पूरी ही खत्म होने वाली होती है तब शरीर कम, मन तेज चलने लगता है, जिससे शरीर में थकावट के चिन्ह जल्द ही प्रकट होने लगता हैं। कार्य अधिक न होने बावजूद तन–मन की जर्जर हालत होने के कारण उससे होता नहीं है इसलिए वह कार्य कम करता है पर व्यस्त अधिक रहता है। ऐसे समय पर जब परमात्मा पिता सर्वशक्तिवान साथी मददगार का सच्चा ज्ञान मिलता है तो यह एक उसके लिए जैसे संजीवनि का काम करता है क्योंकि यह एक उसके लिए बिल्कुल नई चीज होती है। इसलिए सब तरफ से मन हट कर इस तरफ ही लग जाता है।

परमात्मा परिवार व संगठन का निःस्वार्थ स्नेह व सहयोग ईश्वरीय मदद होने के कारण नित्य नई अनुभूतियां होने लगती है जिससे उमंग–उत्साह के जैसे कि पंख लग गये हो, जिससे हर कदम पर सफलता मिलने लगती है। ज्ञान–योग पर पूरा घ्यान होने के कारण माया वार भी नहीं कर पाती पर माया ऐसे ही हार मान ले ऐसी कच्ची खिलाडी नही वो, माया अगर सीधे–2 रूप में आये तो उसे न पहचानने की भूल शायद कोई भी नहीं करेगा, और धोखा खाने से बच जायेंगे, परन्तु वह भी पुरानी खिलाड़ी है, नित्य नये–2 सुहावने रूप रख कर आती है जिससे बड़े–2 महावीर, शूरवीर भी उसके चक्रव्यूह में फंस जाते हैं और सहज ही अपना बेड़ा गर्ककर लेते हैं। उसका एक त्वलंस रूप हमने भी देखा है जो अन्जाने में ही व्यक्ति को पता भी नहीं पड़ता है और वह धीरे–2 उसे पूरा ही हप कर लेती है देखें एक उसका लुभावना रूप –

सेन्टर पर जब हम नये–2 आये थे तो दीपक नाम का एक कुमार बड़े ही अच्छे पुरूषार्थ वाला दिखता था। ज्ञान में छोटा होने के कारण सभी का प्रिय व शिवबाबा भी जैसे उसे उंगली पकड़ कर चलाता है, इसलिए वह बड़े उमंग– उत्साह में मस्त रहता था पर जैसे बच्चे को भी उसके पैरों पर खड़े होने के लिए जब छोड़ा जाता है तो वह कई बार गिरता व कई बार लड़खड़ाता है, इसी प्रकार ज्ञान में जब तक किसी दूसरे को देखने का प्रयास व

सूनने की उत्कण्ठा नहीं रखते सिर्फ बाबा को देखते व सूनते हैं तब तक ठीक रहता है, पर जब दूसरे क्या कह रहें है कोई कहेगा सब थोड़े दिन का नशा है, सदा ही ऐसे थोड़े ही चला जा सकता है, ज्ञान से सब काम थोड़े ही हो सकता है, चूंकि उसकी सोच सकारात्मक होने जा रही थी इसलिए घर से अधिक कार्य करने का दबाव पड़ने लगा।

जब कोई बात सुनी जाती है तो जो विचार चला जाता है तो आज नहीं तो कल अपना प्रभाव अवश्य डालता है। इसी कारण वह लौकिक कार्य में अधिक व्यस्त रहने लग, जिससे फिर अमृतवेला सुस्ती आने लगी। याद व प्राप्तियों की खुशी में मस्त रहने के बजाए नींद के आगोश में मस्त रहता जिससे माया का नशा छाया रहता फिर सोचता क्लास में जल्दी जाकर योग का Chart पूरा कर लूंगा। धीरे–2 व्यस्तता को कारण बना सेवा हर Chance गवांता गया जिससे संगठन व परिवार से दूर होता गया। माया का प्रभाव होने के कारण उसे सूिल कमाई सेवा में दिखती नहीं, इसलिए अब उसे सेवा में रस भी नहीं आता उमंग भी नहीं रहता। धीरे–2 सबसें में भी देरी से जाने लगा मुरली स्वंय भी अखबार की तरह फटाफट पढ़ लेता जिससे मुरली में रस क्या मिलता तो सोचता मुरली घर पर लाकर आराम से पढ़ लूंगा, कभी–2 Class में जाता ही नहीं, फिर रविवार को जाने का नियम बनाया फिर सोचा बाबा हर मुरली में याद करने के लिए ही कहता है सो तो हम घर ही कर लेंगे व कर्म योगी बनने का ही तो सारा ज्ञान है इसलिए कर्म करते भी बाबा को याद करेंगे। घर में ज्ञान–योग क्या होता और योग लगाने पर तो मन लगता नहीं कर्मयोगी बनने का अभ्यास है ही नहीं कैसे कर्मयोगी बन जायेगें। धीरे–2 मुरली छूटी Class छूटा सेवा छूटी घर के वायुमण्डल में योग लगता नहीं घर का भी योग(अमृतवेला) छूट गया जिससे अब न ज्ञान बल रहा न योग बल न सेवा का बल न संगठन का बल तो माया को तो इसे Chance की तलाश थी। अब परीक्षायें आना शुरू हो गयी और धारणयें कमजोर होती गयी खान–पान बिगड़ता गया बदलता गया, मानसिकता परिवर्तन होती गयी अब काम में पस्त कमाई में मदमस्त ज्ञान योग में दिलशिकस्त, माया करने लगी परास्त, जिससे

जीवन बन गई संघर्ष, अब माया के जबरदस्त War से एवं स्वार्थी संबंधों से मन की खीचांतान शुरू हो गयी, क्योंकि जो उसे करना चाहिए उसकी उसे ताकत नहीं। उसे जो नहीं करना चाहिए वही वह कर रहा है वही उसे अच्छा लग रहा है क्योंकि मन खाली तो रह नहीं सकता और कमजोर होने के कारण शक्तिशाली व उर्जावान संकल्प तो कर नहीं सकता इस प्रकार माया ने एक दिन उसे पूरा ही ध्वस्त कर दिया और उसके ज्ञान का सूर्य एक दिन पूरा ही अस्त हो गया।

पर एक दिन उसे इस उल्टे नशे में किसी B.K.ने देखा तो वह आश्चर्य खा गया, कि क्या यह वही दो वर्श पहले वाला दीपक है जो नये लोगों के लिए आदर्श व उदाहरण हुआ करता था, इसे क्या हो गया है। जब उससे पूंछा तो पता चला कि माया के त्वलंस रूप ने उसे घायल ही बल्कि पूरा ही सत्यानाश कर डाला है उसने कहा कि अच्छा कोई बात नहीं तुम हिम्मत हीन नहीं बनो अभी एक युक्ति है। माया शक्तिवान है तो क्या, भगवान भी सर्वशक्तिवान है। आधाकल्प से मदमस्त माया तुम युवाओं को अपना शिकार बनाने में अभ्यस्त हो चुकी है पर उसे अपदस्त करने का बीड़ा शिवबाबा ने भी तुम युवाओं को ही दिया है न सिर्फ जिम्मेवारी दी है परन्तु अपनी सर्वशक्तियां भी दी है जरा उन्हें Use तो करके देखो। भगवान को तुम नव सैनिकों पर पूरा भरोसा है। इसलिए उठो और इस बार माया का पूरा ही बंदोबस्त करने के लिए मन में द्रढ़ता की बेल्ट बांध आ जाओ मैदान में और मुरली एवं योग के Class के समय के सारे कार्य निरस्त करो। अपने और संबंधों के बीच, कर्म और साधनों के बीच वस्तु एवं प्रकृति के बीच, अपने और बातों के बीच में सदा बाबा को मध्यस्त रखे।

मन से जबरदस्त संकल्प अनवरत करें विजय हमारी हुई पडी है, माया को अपदस्त व परास्त करने के लिए बस शुभ व शक्तिशाली संकल्पों की मरम्मत करते रहें, हजारों बार ये कार्य आपने किया है, बस श्रीमत प्रमाण ही समस्त कार्य करने है। सदा संगठन की गस्त में रहकर, सेवा में अलमस्त रहें, जब भी समय मिले मन को श्रेश्ठ चिन्तन में संतप्त रखें,

धारणाओं के अभ्यस्त बनें। समस्त संसार जो माया के अधीनस्थ है उससे मुक्त करने के लिए बाबा को आश्वास्त करो कि हम अपने को सबसे तटस्थ रख और संसाधनों व दुनिया की चकाचौंध से विरक्त रख कर माया को 2500 वर्ष के लिए परास्त करके ही दम लेंगे। अब माया को हमने पहचान लिया है वह अगर War करने में सिद्ध हस्त है तो हम भी अब जाग्रत हो चुके हैं और आपका वरद हस्त हमारे मस्तक पर है तो माया की क्या औकात । अब उसकी जरूरत नही अब माया को जाना होगा। अब हमने उसके हर रूप से वाकिफ हो चुके हैं।

इसके रूप अनेकों फैले, स्वर्णिम मृग माया जैसें

भोलेपन में मत फंस जाना, शाश्वत रूप नहीं होते ऐसें।

ओम् शान्ति